Lecture (2) (1)
Pathway

B.A Part III
Paper VII

अपराध के कारण सम्बन्धी सिद्धान्त
(Theories of crime)

Date
29/9/20

अपराध प्रत्येक की एक सर्वव्यापी विशेषता है। कुछ विद्वानों का यहाँ तक कथन है कि अपराध को रोकने के लिए बनाए गये नियम अस्वाभाविक हैं क्योंकि वे व्यक्ति की स्वाभाविक क्रियाओं पर नियंत्रण लगाते हैं। अपराध की प्रकृति और सीमा चाहे कुछ भी हो, हमारे सामने मुख्य प्रश्न यह आता है कि अपराध क्यों होते हैं? विभिन्न विद्वानों ने इस प्रश्न का उत्तर अनेक सिद्धान्तों के रूप में देने का प्रयास किया है।

(1) संस्थापित सिद्धान्त (Classical Theory) इस सिद्धान्त का आधार सुख सम्बन्धी मनोविज्ञान है। यह सिद्धान्त 19 वीं शताब्दी में प्रस्तुत किया गया। इस सिद्धान्त के अन्तर्गत अपराध को रोकने के लिए यह सुझाव दिया गया है कि अपराध के बदले मिलने वाला दण्ड कठोर से कठोर होना चाहिए जिससे अपराधी को अपराध करने से सुख की अपेक्षा दुःख का अनुभव अधिक हो। यह सिद्धान्त काल्पनिक विश्वासों पर आधारित है। अपराधी एक खजांची नहीं होता जो अपराध की परिस्थितियों को देखे बिना ही सभी अपराधियों को एक समान और कठोर दण्ड दिया जाए अपराध की व्यवस्था में आज इस सिद्धान्त को तनिक भी महत्व नहीं दिया जाता।

(2) भौगोलिक सिद्धान्त (Geographical Theory) यह सिद्धान्त भौगोलिक सम्प्रदाय के विचारों पर आधारित है जिसके प्रतिपादकों में क्वेटलेट और ग्वैरी के नाम प्रमुख हैं। इस सिद्धान्त के अनुसार अपराधों का कारण जलवायु ऋतुएँ अथवा प्रतिकूल प्राकृतिक दशाएं ही रहे हैं। क्वेटलेट ने अपराध का एक Thermic Law बनाया जिसमें यह स्पष्ट किया गया कि व्यक्ति के विरुद्ध अपराध जैसे हत्या, बलात्कार पशुता, घातक आक्रमण आदि दक्षिणी प्रदेशों और गर्म मौसम में अधिक होते हैं, जबकि सम्पत्ति के विरुद्ध अपराध जैसे चोरी, डकैती, लूटमार, आदि उत्तरी प्रदेशों और ठंडे मौसम में अधिक मात्रा में पाये जाते हैं। ऋतु परिवर्तन के साथ अपराध का सम्बन्ध जोड़ने के लिए लकेसन ने महीनों का कलेण्डर ही बना दिया जिसमें प्रत्येक माह के अपराध की मात्रा और प्रकृति भिन्न भिन्न दिखायी गई है। अपराध जैसे जटिल प्रक्रिया को भौगोलिक दशाओं के आधार पर स्पष्ट नहीं किया जा सकता। यदि भौगोलिक दशाएँ ही अपराध का कारण है, तब

Scanned by TapScanner

समान भौगोलिक दशाओं में रहने वाले दो समाज
अपराध की मात्रा और प्रकृति में इतना अन्तर क्यों पाया
है? यह सिद्धान्त इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं देता, गि
का कथन है कि वर्तमान युग में भौगोलिक दशाएं अधि
अधिक एक अप्रत्यक्ष कारक है। जो व्यापार रहन, सहन
मानसिक प्रक्रियाओं को प्रभावित करके अपराध की स्थिति उ
कर सकती है

→ (3) प्रारूपवादी सिद्धान्त – अपराध की व्याख्या में यह सि
सबसे अधिक विवादपूर्ण रहा है। इसके अनुसार अपरा
एक विशेष प्रकार का मानव है जिसको अनेक शारीरिक विशे
जन्मजात और गैर अपराधियों से बिल्कुल भिन्न किस्म क
इस विचारधारा के आधार पर यह सिद्धान्त तीन उपशाख
विभाजित है, जिसका उल्लेख निम्न प्रकार है –

→ (क) लम्ब्रोसो का सिद्धान्त – अपराधी जन्मजात होते हैं – इ
अनुसार चौड़े और फैले हुए जबड़े, संकुचित अथवा अन्द
को दबा हुआ माथा, अधिक छोटी अथवा अधिक लम्बी न
चेहरे पर अकारण ही पड़ने वाली लम्बे कान, असाधारण ढ
शरीर पर अधिक बाल, हाथों की अधिक लम्बाई और बाएँ ह
की सक्रियता आदि अपराधी व्यक्तियों की कुछ प्रमुख
शारीरिक विशेषताएँ हैं।

→ (ख) गोडार्ड का सिद्धान्त – गोडार्ड ने भी अपराधियों को जन्मजा
ही माना है एक अपराधी मानसिक रूप से दुर्बल व्यक्ति
होता है इसलिए वह बिना परिणाम पर विचार किए समाज
विरोधी कार्यों में लग जाता है, मानसिक दुर्बलता
एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित होती रहती है।
अपराधियों के सन्ताने भी अपराधी ही बनती हैं।
अर्थात अपराधियों में सन्तानोत्पादन की क्षमता को
समाप्त करके ही भविष्य में अपराधों से छुटकारा
पाया जा सकता है।

→ (ग) मनोविकार सिद्धान्त – यह सिद्धान्त प्रारूपवादी सिद्धान्त
की ही एक शाखा है। इसमें शारीरिक विशेषताओं के
स्थान पर मानसिक विकार मनुष्य की संवेगात्मक
अस्थिरता को अपराध का कारण माना गया है।

→ (4) समाजशास्त्रीय सिद्धान्त – अपराध की व्याख्या में आज समाजशास्त्री

Scanned by TapScanner

विचारधारा को सबसे उपयुक्त समझा जाता है। यह विचार धारा अपराध के सुखवादी, भौतिकवादी, मनोवैज्ञानिक तथा जन्मजात सिद्धान्तों का खण्डन करके यह निष्कर्ष देती है कि किसी समाज में अपराध सामाजिक दशाओं की उपज है तथा समाज ही अपराधियों का निर्माण करता है। अपराध एक प्रकार का सामाजिक रोग है तथा अपराध की ओर प्रवृत्त हो गये। तथा अपराध को वैयक्तिक विघटन की एक विशेष प्रवृति के रूप में स्पष्ट किया जाना चाहिए

→ सदरलैण्ड का विचार है कि अपराध एक सीखा हुआ व्यवहार है जो अन्तक्रिया तथा सम्पर्क के द्वारा एक से दूसरे व्यक्ति द्वारा ग्रहण किया जाता है। अपराधी व्यवहार एक सीखा हुआ व्यवहार है। ② अपराधी व्यवहार की सीख अन्तक्रिया और संचार के माध्यम से प्रभावपूर्ण बनती है, अपराधी व्यवहार का एक बड़ा भाग प्राथमिक समूहों में सीखा जाता है। अपराधी व्यवहार की सीमा अथवा दर सीखने की प्रक्रिया की प्राथमिकता, पुनरावृति अवधि तथा तीव्रता के अनुसार घटती बढ़ती है।

→ टैफ्ट ने अपराध के समाजशास्त्रीय सिद्धान्त को सांस्कृतिक आधार पर विकसित करते हुए यह निष्कर्ष देते हैं कि अपराध सांस्कृतिक असन्तुलन की उपज है। फ्रैंकी, स्ट्रिल, वर्ट हेली, तथा वार्नर और टीटर्स जैसे विद्वानों का विचार है कि अपराधी व्यवहार को विभिन्न संयोगों का परिणाम है तथा विभिन्न परिस्थितियाँ भिन्न भिन्न रूप से प्रभावित करती हैं, यही वह दृष्टिकोण है जो समाज-शास्त्रीय सिद्धान्त की सार्थकता को स्पष्ट करदेता है।

Prem -
Dr Arun Kumar
Reader
Deptt of Sociology
Shershah College
SASARAM.
29/9/20

Scanned by TapScanner